PGDSHST

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

सत्रीय कार्य
2024

(जनवरी 2024 और जुलाई 2024 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)
सत्रीय कार्य 2024

(जनवरी 2024 और जुलाई 2024 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'सिंधी–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (पी.सी.एस.एच.एस.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। आठ पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और दो पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित हैं। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2024 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2024 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	**30.09.2024**	**31.03.2025**
एम.टी.टी.-041 सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	**30.09.2024**	**31.03.2025**
एम.टी.टी.–042 सिंधी–हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	**30.09.2024**	**31.03.2025**
एम.टी.टी.–043 अनुवाद सिद्धांत और सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परंपरा	**30.09.2024**	**31.03.2025**
एम.टी.टी.–044 अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी–हिंदी–सिंधी का संदर्भ	**30.09.2024**	**31.03.2025**
एम.टी.टी.–045 हिंदी–सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	**30.09.2024**	**31.03.2025**

*** सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।**

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर

सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें। प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ सिंधी और हिंदी भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। इसके अलावा अनुवाद संबंधी सिद्धांतों, प्रक्रिया और प्रविधि से भी परिचित कराते हुए इन भाषाओं में अनुवाद की परंपरा से अवगत कराया गया है।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....
नाम : .....
पता : .....
.....
पाठ्यक्रम कोड :.....
पाठ्यक्रम का शीर्षक : ..... हस्ताक्षर :.....
सत्रीय कार्य कोड : ..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।

- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एम.टी.टी–001)
सत्रीय कार्य
(जनवरी 2024 और जुलाई 2024 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–001
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–001/एएसटी/
(टी.एम.ए.)/2024

पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. बहुभाषिक समाज में अनुवाद के विविध क्षेत्रों की चर्चा कीजिए। 10

2. भाषा–परिवार से आप क्या समझते हैं? भारत के प्रमुख भाषा–परिवारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए। 10

3. 'सामाजिक–सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अनुवाद में पुनःसृजन' पर निबंध लिखिए। 10

4. ध्वनि और वर्ण का अर्थ स्पष्ट करते हुए अनुवाद में वर्णमाला का महत्व सिद्ध कीजिए। 10

5. प्रकृति के आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का सोदाहरण वर्णन कीजिए। 10

6. भारतीय भाषाओं की वाक्य रचना की समानताओं और असमानताओं पर अनुवाद के संदर्भ में चर्चा कीजिए। 10

7. भारतीय भाषाओं की शब्दावली में विद्यमान अर्थपरक असमानताओं पर विस्तृत चर्चा कीजिए। 10

8. बहुभाषिकता के हानि–लाभ को लेकर बहस के विविध आयामों पर निबंध लिखिए। 10

9. मशीनी अनुवाद की संकल्पना स्पष्ट करते हुए मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया एवं विधियों की चर्चा कीजिए। 10

10. निम्नलिखित पर लगभग 250–250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 5x2=10
    (क) अनुवाद पुनरीक्षण और अनुवाद मूल्यांकन
    (क) आशु अनुवाद की आंतरिक प्रक्रिया

***

सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन (एम.टी.टी.–041)
(जनवरी 2024 और जुलाई 2024 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–041
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–041/एएसटी/(टी.एम.ए)/2024

अधिकतम अंक : 100

---

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 300–300 शब्दों में दीजिए : 10x2=20
   (क) सिंधी और हिंदी की लिंग व्यवस्था की तुलना कीजिए।
   (ख) सिंधी भाषा और साहित्य पर संस्कृत की परंपरा के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

2. निम्नलिखित सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

1 आंडो	8 तंगी	15 मोचिड़ो
2 आहिस्ते	9 नीहुं	16 लबाड़
3 उथणु	10 पलउ	17 वहिदत
4 कतणु	11 अलभु	18 वेरी
5 कोड़ियो	12 फरेबु	19 सघ
6 घुंजु	13 बाझारो	20 हिरासु
7 टपाली	14 मिस्कीनु	

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखिए : 5

1 अपच	8 दौर	15 मरोरथ
2 आदि	9 नट	16 मंथन
3 करुण	10 नैन	17 राउ
4 कौड़ी	11 परिश्रम	18 लोभी
5 चकित	12 पहाड़ा	19 शिखर
6 जेब	13 पैराकार	20 साबुत
7 टीपना	14 बदन	

4. निम्नलिखित सिंधी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 20
   1. तव्हां कहिड़े विषय में डिग्री हासिल कई आहे?
   2. तव्हां जे पुट/धीउ जो नालो बुधायो।
   3. विमला घर जो कमु करे आई आहे।
   4. गोपालदास जो पुटु दुबईअ में कमाईंदो आहे।
   5. राकेश फिकी चांहि पीयंदो आहे।
   6. रेखा मोहिनीअ जी पकी साहेड़ी आहे।
   7. शांता अजु बेसण जी भाजी ठाही आहे।
   8. मां रोज़ सुबुह जो पंधु करण वेदों आहियां।
   9. किशनी ऑफीस में नौकरी कंदी आहे।
   10. गिदवाणी शाम जो पंजे बजे असांजे घरु ईंदो।

11. मोहनदास जे पुट जी शादी होटल में आहे।
12. राधा मिठे आवाज़ में गाईंदी आहे।
13. अजु असां जे कॉलेज में क्रिकेट चटाभेटी आहे।
14. असां जे स्कूल में शाम जो सिंधी भाषा सेखारण जा क्लास हली रहिया आहिनि।
15. राकेश कथक नृत्य सिखियो आहे।
16. अजु असां सर्कस डिसण वेंदासीं।
17. सदाईं सादो खाधो खाइणु घुरिजे।
18. अजु मंदर में भागवत कथा थींदी।
19. आरतवार डींहुं असां दिल्लीअ वेंदासीं।
20. माधव जा इम्तहान सूमर खां शुरु थींदा।

5.(क) निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों का आशय हिंदी में स्पष्ट कीजिए : 10

1. आई टांडे खे बोरचियाणी थी वेठी।
2. घणे खाधे घणी बुख।
3. जेसीं सास तेसीं आस।
4. जेको अध खे छडे सज़ीअ पुठियां डुके, सो अध खां बि वञे।
5. धकु हणु धीअ खे त सिखे नुंहं।
6. बदन में दमु न ठहे नालो जोरावर खान।
7. ब भाउर टियों लेखो।
8. भाणु त खेती न त कोरी रेती।
9. माउ जणींदी पुटिड़ा, भागु न डींदी वंडे।
10. जेडो क़ाइदो, ओतिये फ़ाइदो।

(ख) निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के लिए हिंदी मुहावरे/लोकोक्तियाँ लिखिए : 10

1. दूहों दुखाइणु
2. दिल सां लगणु
3. दादु डियणु
4. रुक जा चणा चबणु
5. लकु लंघणु
6. सीनो साहिजु
7. अखि डेखारणु
8. डंद डियणु
9. साहु छडणु
10. हिक लठि सां हकिलणु

6. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10x2=20

(क) कंवर वटि सदाईं लूलनि लंगिड़नि, पिंगुलनि, अंधनि, मंडनि जो अटालो रहदो हो, जिनि जो पालण पोषणु पंहिंजे हड़ां–बड़ां कंदो हो। हिक दफ़े, कंभलीमा जे गोठ में अमृत वेले भजनु करण लाइ संगति में आयो ऐं ख्यालु होसि त मंझंदि ताईं कीर्तनु चालू रखंदो। वक़्तु वियो गुज़िरंदो ऐं मेलो वियो मचंदो। माण्हू मौज सां शब्द वर्षा जो रसु पी रहिया हुआ, त हिक शेवाधारीअ चयुसि, 'साईं तव्हां जे टोलीअ में हिकु सूरदासु आहे। चवे थो त जेसी तव्हीं तेल मेट सां न विहिंजारींदा, तेसीं हू पाण अनु जलु न वर्ताईंदो।' इन ते कंवर चयुसि, 'हाजुरु, कीर्तनु पूरो करे अची थो सनानु करायांसि।' पूरे बारहें बजे मजलिस बरखास्तु थी ऐं कंवरु मोटी आयो सूरदास वटि। पोइ यकदमि छेर जामो लाहे, मेटु मले ऐं उनमें तेलु विझी, सूरदास जे बुत जी खूबु मालिश कई ऐं महिट चहिट करे उनखे अछो उजिरो कयाई अहिड़ो हो कंवरु जंहिं जहिड़ो किरोड़नि में को मुश्किलु लभे!

(ख) मुहं ते खुशामद करण मां घणियूं ख़राबियूं थियूं जागनि। हिकिडो त खुशामद कंदडु अंदिरीं बाहिरी करणु सिखंदो, जंहिं लाइ शाइर चयो आहे; चे 'बाहिरां ज़ेबु ज़िबान में, दिलि में हचारो' बियो त जंहिंजी खुशामद थींदी सो दुनियां पाणियूं वियो। मंझिसि जेके अवगुण ऐं बदि ख़सिलतूं हूंदियूं, से छडणु त छडण जे मागि, उटिलो उन्हनि में वेंदो पको थींदो तारीख मां केतिरा मिसाल मिलनि था त हाकिम जुल्मी या बदिकार हूंदा हुआ ऐं सलाहकार ऐं वज़ीर मिलंदा हुअनि लिली चिपी कंदड़, त मुल्क में अंधेरु बरी वेंदो हो, दुनिया में सचु चईं डींदड़ थोरा लभंदा।

खुशामद जी गिला करण मां इहो मतिलबु न आहे त कंहिं शख्स में चङा गुण ऐं खसिलतू हुजनि, त संदसि दिलि वठण ऐं खेसि हिमिथाइण लाइ, संदसि साराह न कजे, साराह करण त वाजिबु आहे, पर तजवीज़ सां, जीअं मंझिसि हठु न जागे ऐं आफिरिजी न वञे। बियो त घणा माइट बार खे चतुराईअ जो को जवाबु डींदा, या अकुल जी गाल्हि कंदे बधंदा आहिनि, त बियनि जे रूबरू संदसि मुंहं ते खेसि साराहींदा आहिनी। इन्हीअ करे बारनि में नंढे ई हठ ऐं अभिमान जो बिजु थो पवे।

7. निम्नलिखित अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 10

भारतवर्ष में वेदों के लिए आज भी स्थान है। प्राचीनकाल में तो वेदों की शिक्षा ही सर्वेसर्वा समझी जाती रही थी। कालांतर में वेदार्थ भी अति–दुर्जेय हो गया था। समाधिस्थ पुरुष जिस भाँति ब्रह्म दर्शन का आनंद–लाभ प्राप्त कर सकता था, उसी भाँति समाधियुक्त अंतःकरण द्वारा ही शब्द ब्रह्म रूपी वेद का सही अर्थ समझ में आ सकता था। वेद अलौकिक ज्ञान भंडार के आधार हैं, जिनमें ज्ञान और विज्ञान भरा–पूरा है। मंत्रद्रष्टा ऋषियों (Research Scholars) उन्हें समाधि अवस्था में देखा है। लौकिक उपायों से वेद को समझने के लिए कालांतर में विद्वानों ने ग्रंथ रच डाले। वे हैं – वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष)। तदनंतर वेदोपांग (दर्शनशास्त्र) भी सामने आए। इतने पर भी वेदों की गूढ़ता बनी ही रही, तब पुराण और इतिहासों ने इन्हें और अधिक लौकिक, आध्यात्मिक एवं आलंकारिक भाषा में सुगम करने का उपाय जनता के सम्मुख रखा। अतः वेदार्थ का वास्तविक रहस्य जानने के पूर्व इन षडंग (षट्शास्त्र) को जानना अति–आवश्यक है। इनके साथ ही वेदोपांग से भी पूर्ण परिचित होना भी आवश्यक है।

***

सिंधी–हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद (एम.टी.टी.–042)
(जनवरी 2024 और जुलाई 2024 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–042
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–042 / एएसटी / (टी.एम.ए) / 2024

अधिकतम अंक : 100

---

1. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

   1. मयूर एम.ए. सिंधी में दाखिला वरिती आहे।
   2. राजा खे प्रजा जी भलाईअ जा कम करण घुजनि।
   3. बगीचे में गुलनि जा सुहिणा बुटा लगल आहिनि।
   4. सुभाणे स्कूल में संगीत चटाभेटी आहे।
   5. संगीता अजु गुवारि ठाही आहे।
   6. हश्मतराय खे चारि पुट आहिनि।
   7. मूं वटि चारि सौ सिंधी किताब आहिनि।
   8. असांखे मज़मून चटाभेटीअ में बहिरो वठणु घुरिजे।
   9. वर्षा मास्तराणीअ जी नौकरी कंदी आहे।
   10. पोस्ट ऑफीस सुबुह जो डहें बजे खां शाम जो छहें बजे ताई खुलंदी आहे।

2. निम्नलिखित शब्दों का सिंधी और हिंदी अर्थ लिखिए : 5

		सिंधी अर्थ	हिंदी अर्थ
1	कांगु	.....	.....
2	अलूप	.....	.....
3	उमाणणु	.....	.....
4	बिजु	.....	.....
5	तफ़ावत	.....	.....
6	तक़रीर	.....	.....
7	ज़िंदड़	.....	.....
8	पारखू	.....	.....
9	अठुटीह	.....	.....
10	उम्दो	.....	.....
11	हिरिसु	.....	.....
12	ख़ल्क	.....	.....
13	ढुकु	.....	.....
14	निमाणो	.....	.....
15	ख़मीस	.....	.....
16	किफ़ायत	.....	.....
17	खंधो	.....	.....

18	गोराबु	.....	.....
19	मरचूस	.....	.....
20	मासातु	.....	.....

3. कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके सिंधी और हिंदी में समान पर्याय प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए,

उर्दूमूलक शब्द	**सिंधी**	**हिंदी**
मेहमान	मिज़मान	अतिथि

नीचे कुछ इसी प्रकार के शब्द दिए गए हैं। उनके सिंधी और हिंदी पर्याय लिखिए : 5

		सिंधी अर्थ	**हिंदी अर्थ**
1	उज़्वा	.....	.....
2	इल्म	.....	.....
3	उरुज़	.....	.....
4	काइनात	.....	.....
5	ज़ालिम	.....	.....
6	ख़ातिरी	.....	.....
7	तहज़ीब	.....	.....
8	सिफत	.....	.....
9	फितरत	.....	.....
10	हक़ीकत	.....	.....
11	अहिसान फरामोश	.....	.....
12	खिज़मत	.....	.....
13	नूरचिश्म	.....	.....
14	लासानी	.....	.....
15	जमालियात	.....	.....
16	हुकूमत	.....	.....
17	बादशाह	.....	.....
18	खैरियत	.....	.....
19	हैवान	.....	.....
20	मज़मून	.....	.....

4. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 7x10=70

(क) शइरु व शाहरी खुदाई ड़ाति आहे; जंहिंखे धणी अता करे! शइरु अलिहामु आहे। उहाई सची शाइरी आहे जा अंदर मां उछल डेई बाहिरु निकिरे ऐं ठोठि दिलियुनि खे सरिसबुजु व शादाबु करे। इन्सान जे मन में वक्ति बि वक्ति केतिराई उमंग, अहिसास ऐं उधमा पैदा थियनि था। हू ज़िंदगीअ जे जुदा जुदा हालतुनि मां लंघे थो। कड़हिं खुशी त कड़हिं ग़मु, कड़हिं दुनिया जी बेवफाई त कड़हिं वफादारी, कड़हिं उलिफत त कड़हिं कुलिफत, कड़हिं दोसिती त कड़हिं दुशिमनी, कड़हिं ऊंधहि त कड़हिं सोझिरो, कड़हिं उमीद जे आफिताब जो दीदारु करे थो त कड़हिं कारनि ककरनि में छिपियल माहिताब करे मायूसु आहे, कड़हिं मज़िलूमनि मथां जुलिमु थींदो डिसी संदसि दिलि में ज़ालिमनि खिलाफु जोशु व

जौलानु पैदा थिये थो त कड़हिं हरीफनि जूं हरिफतूं ऐं सरमाअेदारनि जा सितम संदसि दिलि में बग़ावत जी बाहि भड़िकाईनि था, कड़हिं महिबूब जो मुखिड़ो पसी अंदर में खुशीअ जी लहिर पैदा थिए थी त कड़हिं उनजे फिराक़ में लुड़िक लाड़े थो। कड़हिं मिजाज़ी इशिक़ जी लुताफत त कड़हिं हक़ीक़ी इशिक़ जी रुहानी राहत, कड़हिं कंहिं विधिवा जा गोड़िहा, त कड़हिं कंहिं यतीमु उदासु चहिरो, कड़हिं रंजु त कड़हिं राहत, संदसि मन रुपी महिराण में विचारनि रुपी तरंगूं पैदा कनि थियूं। उहे तरंगूं कंहिं सांचे में ढलिजी बाहिरि निकिरनि थियूं; तड़हिं कविता या शइर जो रुप इख़तियारु कनि थियूं।

(ख) वड़िड़नि खे बि घुरिजे त हू हवा जो रुखु डिसी पुठी डेई पंहिंजी औलादि जे साम्हूं न पवनि। हालतुनि जे मदेनज़र नंढनि सां रुबाब वारो वरिताउ न करे पियार जो वरिताउ कनि। हू की क़दुरु पाण खे नंढनि जे ख़ियालाति सां ठहिकाईनि। वड़िड़नि खे किफायत ऐं क़िनाइत करण जो ढंगु हूंदो आहे। हू चाहींदा आहिनि त संदनि संतानु बि किफायत क़िनाइत सां हले। उहो की कजे जो मींहं वसंदे कमु अचे। माणिहू सवड़ि आहिरु पेर डिघेड़े। अज़ुकाल्ह घणो करे नंढा हथ फाडु थी पिया आहिनि। वड़िड़नि जी ताकीद बावजूद नंढा मनिमानी कनि था। घर वारियुनि जे घुरिजुनि ऐं ऐशु परसितु ज़िंदगी गुज़ारण लाइ, बाहिरियों डेखु वेखु दबिदबो क़ाइमु रखण लाइ वित खां वधीक उड़ामनि था। के त क़र्ज़ु खणी मर्ज़ में मुबितिला थियनि था, जिनि जी चटी बि वड़िड़नि खे भरिणी पवे थी। घर जा वड़िड़ा इहो नथा सही सघनि त संदनि औलादु ओफिटू खर्चु करे। अहिड़ियुनि हालतुनि में वड़िड़नि ऐं नंढनि जे विच में तनावु पैदा थिए थो, मतिभेद पैदा थियनि था। वड़िड़नि ऐं नंढनि खे विचीं वाट वठी पंहिंजे ऐं वड़िड़नि जो जीवनु सुखुमय गुज़ारणु घुरिजे ।

के के पुट अहिड़ा पालीसी बाजु थी पिया आहिनि जो हू माउ पीउ खे रेहे रेबे घर जूं सभु चाबियूं उन्हनि खां वठी था छड़ीनि। पोइ वड़िड़नि खे औलाद जो मजू थियणो पवे थो। बड़िड़नि खे घुरिजे त हू पंहिंजे हूंदे पंहिंजी समूरी पूंजी औलाद हवाले न कनि, न त खेनि डुखिया डींहं डिसिणा पवंदा। नौजवाननि खे मुंहिंजी गुज़ारिशु आहे त ग़मु खाई वड़िड़नि जी खिज़िमत कंदा त संदनि दुआऊं अव्हां खे अड़े छड़ींदियूं।

(ग) दरअसलि सिधी अदब जो अवाइली दौरु लोक अदब जो दौरु ई हो। झूलेलाल जे उस्तुतीअ में गायल पंजिड़ा, पीरनि फ़कीरनि जे साराह में गायल गीत इन जा मिसाल आहिनि। सिंधी लोककथाऊं लोक जीवन जो अणवंडियो हिसो बणिजी चुकियूं हुयूं। शाह लतीफ़ जहिड़नि शाइरनि इन्हनि खे पंहिजे शाइरीअ जो पारसु छुहाए अमरु बणाए छड़ियो।

जार्ज स्टेक पंहिजे "सिंधी ग्रामर" (1849 ई.) जे पछाड़ीअ में पंज लोककथाऊं पेशि कयूं, जिनि खे नसुर में लिखियल सभ खां आगाटियूं लोककथाऊं कोठे सघिजे थो। सन 1861 ई. में उधाराम थांवरदास मीरचंदाणीअ राइ डियाच जो क़िसो ऐं बियूं डह आखाणियूं गड़े शाया करायूं। हुन लोक कहाणियुनि खे लोकप्रिय बणाइण लाइ 'सिंधु' मख़्जिन में 'शहज़ादी अमुल माणिक' पिणि शाया कराई। इन खां सवाइ 'कोइल डीपचंद' जहिड़ियूं लोककथाऊं पिणि सिंधी लोक अदब में काफ़ी अहमियत रखनि थियूं। अगिते हली दर्सी किताबनि ऐं मुख़्तलिफ़ु रिसालनि में झझो लोक अदबु शाया थींदो रहियो।

इन दौर में सिंधीअ जे उपबोलीअ कछीअ में पिणि काफ़ी अदबु मिले थो। कान्हाजी धरमसिंघ 'काठियावाड़ी साहितु' बिनि भाङनि में 1916 ऐं 1923 ई. में शाया करायो। उन बैदि गौरीशंकर जइशंकर 'कछ देश नी झूनी वार्ताओ' (1924 ई.) शाया करायो, जंहिं में छाएतालीह आखाणियूं डिनल आहिनि। इन में मूमल राणो, उमर मारुई, सुहिणी मेहारु ऐं दोदों चनेसरू वग़ैरह जहिड़ियूं मशहूरु लोककथाऊं पिणि शामिलु आहिनि।

(घ) माउ जी विरध अवस्था थी वञण करे बिन्हीं भाउरनि फ़ैसिलो कयो त हाणे हिकु भाउ फैमिलीअ सूधो हिंदुस्तान में माउ वटि अची रहे। सो राम विलायत खे अलविदा करे, पंहिंजा बार वठी हलियो आयो हुओ। पहिरियां कुझु डींहं त सभु ठीक हलियो, पर पोइ हुन महसूस कयो त संदसि बई नन्ढा बार कुझु कुझु हीसियल पिए नज़र आया। हू पंहिंजे ई घर में अहिड़ी ख़बरदारीअ ऐं सम्भाल सां हलंदा हुआ, जणु कंहिं अज़–ग़ैबी हमले खां बचाउ कन्दा हुजनि। रवाजी बारनि वांगुरु रांदि रूंद करणु, अलमस्त थी घुमण फिरण बदिरां हू सियाणनि बारनि वांगुरु सदाईं या त पंहिंजे कमरे में दर बंदि करे वेही पढ़ंदा हुआ या माउ जे साये में बाहिरि निकिरंदा हुआ। राति जो बि हू ज़ोर करे माउ सां ई गडु सुम्हंदा हुआ। राम जडहिं इन ग़ाल्हि ते घणो ग़ौर कयो त खेसि लगो त संदसि बार पंहिंजीअ पुफीअ पदूअ खां बेहदि डिजंदा हुआ।

चरियाइप में अची जडहिं पदू शयूं फिटी करे भजन्दी हुई या अध अध राति जो ओचितो पंहिंजे बंदि कमरे में रड़ियूं कंदी हुई त बार बिल्कुल दहिलिजी वेंदा हुआ ऐं छिर्क भरे माउ खे चंबुड़न्दा हुआ। पहिरीं जडहिं बार महिने अध लाइ माइटनि सां गडु हिन्दुस्तान घुमण ईंदा हुआ ते संदनि अधु वक्त नानाणानि में गुज़िरी वेन्दो हुआ ऐं बाकी थोरो घणो वक्तु जेको हू पंहिंजे घर गुज़ारीन्दा हुआ, उनमें पदू संदनि लाइ हिकु रौंशो हुई। हिंदुस्तान मां वञण बइदि पदू संदनि ज़हन मां निकिरी वेंदी हुई ऐं विलायत में हूं पंहिंजे कम कार मे लगी वेंदा हुआ।

(ङ) पर हिकु अजीबु लुत्फ़ु आहे, जंहिं में बियनि घणनि लुत्फ़नि जूं सूरतूं ऐं सीरतूं मुयसर आहिनि। उन्हीअ लुत्फ़ में शराब जो नशो आहे ऐं हुस्न जी नाज़ वारी कशशि आहे। उन्हीअ लुत्फ़ में मशगुली बि आहे त विंदुरु बि आहे, उन्हीअ में बेदारी बि आहे त ख्वाबु बि आहे। उन्हीअ वसीले गौरा शंकर ऐं कैलाश जे ऊचाईअ ते परवाज़ नसीबु थो थिए त पाताल में बि टुबी हणिजे थी; उन्हीअ लुत्फ़ में महफिल जो मेडु आहे त बयाबाननि जी एकांत सुञ बि आहे। उन्हीअ लुत्फ़ में सरोद साज़ आहे त अंतरध्यानी बि आहे, उन्हीअ लुत्फ़ में जीअ जी फरिहत आहे त जान जी राहत बि आहे। उन्हीअ लुत्फ़ हूंदे भिखारी बि बादशाह आहे, कंगाल बि मालिकु आहे, बद–सूरत बि सुहिणो जवानु आहे, निसतों बि बलवानु आहे। उन्हीअ लुत्फ़ हूंदे सदियूं ऐं जुग अचियो असां वटि बीहनि, वक्त ऐं जाइ जी हद कान रहे। उन्हीअ लुत्फ़ जे करे हिंदी फिरंगी हिकु थियनि। उन्हीअ लुत्फ़ लाइ न त्यारी खपे, न पूजा आरती। बराबर आहे त निंड जहिड़ो लुकिमो कोन्हे, मौत जहिड़ो मज़ो कोन्हे, पर दुनियवी लफ़्ज़नि में जे हिक खास लज़ीज़ ऐं पाण भुलाईंदड़ विंदुराईंदड़ लुत्फ़ जी कंहिं खे सुधि आहे त उन्हीअ शख्स जी, जंहिं लुत्फ़ु वरितो आहे, किताबनि जे करामती वर्क़नि मां।

(च) इंसान जी जीवत बि मज़े जहिड़ी आहे। लगो वाउ वियो साहु। जीतामिड़े में जीतामिड़ो जीवु बि इंसान खे हलाख करे सघे थो ऐं शायदि मारे बि सघेसि। होडांहं सृष्टीअ जे नज़ारनि, बीठल शयुनि ऐं फिरंदड़ चकरनि डे अखि खणी निहारिजे त विस्मय में पइजी वञिबो त हिननि अगियां इंसान जी मजाल ई कहिड़ी आहे। छा ते थो इंसान बांवरु करे?

इंसान कहिड़ो न लाचारु, कहिड़ो न कमज़ोरु आहे! जे इंसान जे ज़िन्दगीअ जे वारदातुनि ते सरासरी दृष्टी कजे त बि साग़ियो वीचारु ईंदो। अध उम्र खां मथे या अधु उम्र वञे अणजाणाईअ जी अवस्था में। पेट खे कूतु पहुचाइण में ऐं खटण कमाइण जे लाइक बणिजण में, बाकी अधु उम्र वञे घर जे खिट–पिट, अयाल जे ग़णितीअ, बुत जे रखोणीअ ऐं आईंदह जे डप डकिणीअ में। घणनि खे बियो की सुझे कीन, सवाइ इन्हीअ जे त सुभां उदरपूरना कीअं कबी शाल पत जी गुज़रे। इन्हीअ फिक्र ई घणनि खे सोढ़हो घुटियो आहे। सौ मां नवे खां मथे इंसाननि खे इहाई चिंता लग़ल आहे त पाणु कौअं खणां? बिए कंहिं किरत लाइ न फुर्सत अथसि, न चाहिना अथसि।

पोइ छोन चइजे त अहिड़ी ज़िंदगीअ में रखियो छा आहे? मिरूंअ ऐं माण्हूअ में कहिड़ो फर्क थियो? बई पेट जी पूजा में पूरा आहिनि, पोइ माण्हू छो मइतबरू सडिजे? जे मिरूं गार में रहियो ऐं माण्हू महिलात में, त इन्हीअ करे को माण्हूअ महत कोन पातो। इएं त माण्हू मिरूंअ खां वधीक मुहताज ऐ लाचार आहे। जेसीं माण्हूअ खे हकियो तकियो हंधि विहाणो न आहे, तेसीं निंड महाल अथसि, जेसीं पकल ताम न डिजेसि, तेसीं पेट न भरजेसि। पोइ बि जे खाधो हज़मु थिएसि, गर्मी सर्दी बि मिरूंअ जेतिरी न सही सघे। बाकी छा में अची माण्हू मिरूअ खां मथे थियो?

(छ) जे सिंधु जे जल जो महात्म अहिड़ो ऊच कोटीअ जो आहे त सिंधु जी मिटी का घटि न आहे। सिंधु जी मिटी मर्ज़ लाइ माजूनु आहे, मन लाइ मौज आहे। सिंधु जे पटनि भटनि में कुशादगी आहे, ताज़गी आहे, नवाण आहे। सोढ़ह सिंधु में थिए कान, सिंधु में सदाईं सुकार आहे, जिते सोढ़ह कान्हे सुकर आहे, उते सबुरु आहे, मन खे शान्ती आहे, सूंहं लाइ आबिलाशा आहे, सिन्धी थोरे खटिए घणी बरकत जा आदी आहिनि, हुननि खे माया जी उहा ममता न आहे जा चित खे चलाए। थोरी महिनत सां सिंधु में हरिको माण्हू सुखियो सताबो रही सघे थो। हद खां बाहिरि मेड़ण ऐं बखील थियण सिंधियत में रवा न आहे। सिंधीअ वटि जे कुझु गडु थियो त सदाविरत में वियो, महिमान नवाज़ीअ में खर्चु थियो। डूराहनि डेसावरनि में सिंधियुनि जूं खैराती संस्थाऊं हलनि पयूं। सिंधी कमी ऐ कासबी, वणजारा ऐं सर्राफ, मारूअड़ा ऐं मीर, कलाल ऐ कामोरा, सिन्धु जे मिटीअ मां उपिजियल, सिंधु जे जल मां तृप्त थियल, ग़ैरत जा धणी आहिनि ऐं तोकल पसंद आहिनि। हुननि खे पंहिंजे रब ऐं डुथ, भत ऐं भोर पराए पुलाअ खां घणो वधीक था वणनि। बियनि जे खाधे पीते, चोड़ण माणण ते हननि खे रशक नथो जागे, हुननि जो अंदर नथो जले। सिंधु जी मिटी छूत छात या वेर ऐं तइसुब लाइ कातिल ज़हरु आहे; सिंधीअ लाइ 'चीटीअ एं कुंचर में समु डिसण भगवान', बिल्कुलु सवली ग़ाल्हि आहे। सिंधु जा दहकानी, ओठी ऐं गेंवार कंहिं कंहिं वेर उन्हीअ उताहीअं ते था रसनि उन्हीअ गहिराई में था झाती पाईनि, जंहिं उताहीअं ऐं गहिराईअ लाइ योगी ऐं सिध पुरुष पाण था ग़ारीनि ऐं तपस्या कनि। उठ ते चढ़ी सिंधु जे पटनि सां सफर करणु माना मन खे ईश्वर जे पासे खींचणु, एकांत जे आलाप खे कन डेई बुधणु, कडहिं कडहिं सुधु बुधु बि विञाए विहणु। सिंधु जीजल ऐं मिटीअ जे मेलाप खे शक्ति आहे त चित खे चरियो करे, नासवंत दुनिया मां मन खे हटाए ऐं हक़ीक़ी मंज़िल डांहुं विख वधाराए। सिंधु जे चपे चपे ते संतनि जो वासो आहे, सिंधु जे नगरनि ऐं टकरनि ते सवा लख पीरनि जी आस आहे।

5. निम्नलिखित अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 10

बालक प्रकृति की एक अनमोल रचना है। उसकी मासूम एवं मीठी बातें सुनकर संसार एक अनोखा आनंद पाता है। वही बालक आगे चलकर देश का भावी कर्णधार एवं भविष्य का निर्माता बनता है और समाज, देश एवं राष्ट्र का दायित्व निभाता है। अतः बच्चों को

राष्ट्रीय चेतना की दिशा में प्रशिक्षित किया जाए तो वे आगे चलकर अपना दायित्व अच्छी तरह से निभा सकेंगे। यह काम साहित्यकारों, शिक्षकों और अभिभावकों को करना है।

बच्चों के चरित्र निर्माण में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। अतः बच्चों को ऐसा साहित्य मिलना चाहिए जो न केवल उनके चरित्र एवं मानसिक विकास में उनका मददगार बने बल्कि राष्ट्रीय चेतना की दिशा में भी प्रशिक्षित करे। बाल साहित्यकारों ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा है। भारत की अन्य भाषाओं की तरह सिंधी में भी ऐसी रचनाएँ लिखी गई हैं।

सिंधी में लिखे गए बाल साहित्य में एक ओर आनंद तथा उल्लास के उद्देश्य वाली रचनाएँ मिलती हैं तो दूसरी ओर बच्च्वों में राष्ट्र–प्रेम, राष्ट्र–भावना, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, मातृभूमि के लिए प्रेम, भारतीय संस्कृति के प्रति आदर, विश्व मंगल की कामना से ओत–प्रोत रचनाएँ भी मिलती हैं। इस तरह से देखा जाए तो भारत की विभिन्न भाषाओं के बाल साहित्यकारों की तरह बच्चों को राष्ट्रीय चेतना की दिशा में प्रशिक्षित करने का दायित्व सिंधी बाल साहित्यकारों ने भी पूरी निष्ठा से निभाया है। सिंधी के बाल साहित्यकारों ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपने–अपने ढंग से राष्ट्रीय चेतना को जगाने का काम किया है।

***

अनुवाद सिद्धांत और सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परंपरा (एम.टी.टी.–043)
(जनवरी 2024 और जुलाई 2024 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–043
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–043/एएसटी/(टी.एम.ए.)/2024

पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. 'अनुवाद' और 'Translation' शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ स्पष्ट करते हुए अनुवाद के व्यापक एवं सीमित संदर्भ पर प्रकाश डालिए। 10

2. अनुवाद की सीमाओं और अननुवाद्यता से क्या अभिप्राय है? पाठ की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की सीमाओं और अननुवाद्यता की चर्चा कीजिए। 10

3. भारतीय अनुवाद चिंतन परंपरा का परिचय प्रस्तुत कीजिए। 10

4. अनुवाद के इतिहास में बाइबिल अनुवादों की भूमिका स्पष्ट कीजिए। 10

5. प्रमुख आधुनिक पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतों का विवेचन कीजिए। 10

6. उत्तर–आधुनिकता की प्रमुख प्रवृत्तियों की व्याख्या कीजिए। 10

7. हिंदुस्तानी कृतियों के अरबी अनुवाद की परंपरा का वर्णन कीजिए। 10

8. सिंधी साहित्य की अनुवाद परंपरा का काल–विभाजन कीजिए और प्रारंभिक काल में अनुवाद परंपरा का वर्णन कीजिए। 10

9. स्वातंत्र्योत्तर काल में सिंधी से भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परंपरा का विस्तृत परिचय दीजिए। 10

10. निम्नलिखित पर लगभग 250–250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 5x2=10

    (क) अनुवाद और अनुसृजन

    (ख) सिंधी अनुवाद परंपरा के विकास में अनुवादकों और पत्रिकाओं की भूमिका

***

अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी–हिंदी–सिंधी का संदर्भ (एम.टी.टी.–044)
(जनवरी 2024 और जुलाई 2024 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–044
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–044/एएसटी/(टी.एम.ए.)/2024

पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए।

---

1 अनुवाद–प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं? अनुवाद की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10

2 प्रविधि से क्या अभिप्राय है? अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए। 10

3 अनुवाद मूल्यांकन क्या है? अनुवाद मूल्यांकन की विभिन्न पद्धतियों की व्याख्या कीजिए। 10

4 अनुवादक के द्वारा निभाए जाने वाले दायित्वों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 10

5 रूपांतरण शब्द–प्रयोग की व्याप्ति पर विचार करते हुए अनुवाद में रूपांतरण के संदर्भ स्पष्ट कीजिए। 10

6 सबटाइटलिंग से क्या अभिप्राय है? सबटाइटलिंग में अनुवाद की तकनीक और चुनौतियों पर प्रकाश डालिए। 10

7 मशीनी अनुवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए और भारत इसके विकास का लेखा–जोखा प्रस्तुत कीजिए। 10

8 कोश निर्माण की आवश्यकता और सिंधी के विशेष संदर्भ में कोश निर्माण प्रक्रिया पर विचार कीजिए। 10

9 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण संबंधी विभिन्न तकनीकों की चर्चा कीजिए। 10

10 निम्नलिखित पर लगभग 250–250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 5x2=10

(क) देश विभाजन–पश्चात सिंधी पारिभाषिक शब्दावली का विकास

(ख) लिप्यंतरण और लिप्यंकन

***

हिंदी–सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद (एम.टी.टी.–045)
(जनवरी 2024 और जुलाई 2024 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–045
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–045 / एएसटी / (टी.एम.ए) / 2024

अधिकतम अंक : 100

---

1. निम्नलिखित वाक्यों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 10

1 हम सब आयोध्या जाने का कार्यक्रम बना रहे हैं।
2 श्याम परीक्षा के लिए बड़ी मेहनत से पढाई कर रहा है।
3 श्रीमती ज्योति नंदवाणी अध्यापिका हैं।
4 क्या मेरे लिए कार्यालय से कोई पत्र आया है?
5 आज मौसम बहुत सुहावना है।
6 मैंने शाह लतीफ का संपूर्ण काव्य पढ़ लिया है।
7 सामी के श्लोक वेदांत मत पर आधारित हैं।
8 कोरोना का प्रकोप लगभग समाप्त हो गया है।
9 भारतीय भाषा संस्थान मैसूर में है।
10 क्या आप तमिल संगम साहित्य से परिचित हैं?

2. निम्नलिखित शब्दों का सिंधी और हिंदी अर्थ लिखिए : 5

		सिंधी अर्थ	हिंदी अर्थ
1	कारोबार	.....	.....
2	हिभथ	.....	.....
3	शानाइतो	.....	.....
4	शाहूकार	.....	.....
5	अमरु	.....	.....
6	आसिरो	.....	.....
7	अकुल	.....	.....
8	जाहिल	.....	.....
9	कीमती	.....	.....
10	हलीमाई	.....	.....
11	निविड़त	.....	.....
12	छमाही	.....	.....
13	कुशादो	.....	.....
14	काठु	.....	.....
15	कशालो	.....	.....
16	खथूरी	.....	.....
17	डाडाणा	.....	.....
18	मानवारो	.....	.....

19 ज़ईफ ....

20 ज़ाइफां ....

3. कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके सिंधी और हिंदी में समान पर्याय प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए,

उर्दूमूलक शब्द	**सिंधी**	**हिंदी**
मेहमान	मिज़मान	अतिथि

नीचे कुछ इसी प्रकार के शब्द दिए गए हैं। उनके सिंधी और हिंदी पर्याय लिखिए : 5

	सिंधी अर्थ	**हिंदी अर्थ**
1 फर्दु	.....	.....
2 शख़्सियत	.....	.....
3 आलिमी	.....	.....
4 जुनून	.....	.....
5 जनाब	.....	.....
6 नवाब	.....	.....
7 शहंशाह	.....	.....
8 हिफ़ाज़त	.....	.....
9 हक़मत	.....	.....
10 झूनो	.....	.....
11 पीरी	.....	.....
12 हर्गिज़	.....	.....
13 काबिले तारीफ	.....	.....
14 दाद	.....	.....
15 फरियाद	.....	.....
16 कुदरत	.....	.....
17 फरिश्तो	.....	.....
18 अदब	.....	.....
19 ख़ैरियत	.....	.....
20 खुदाई	.....	.....

4. निम्नलिखित अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 7x10=70

(क) विदेश जाकर चित्रा तन–मन से अपने काम में जुट गई, उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच गई। भिखमंगी और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबारों के कॉलम भर गए। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गई। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र–व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला, फिर कम होते–होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से तो उसे यह भी नहीं मालूम कि वह कहाँ है। नई कल्पनाएँ और नए–नए विचार उसे नवीन सृजन की प्रेरणा देते और वह उन्हीं में खोई रहती। उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ होतीं। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम परस्कार प्राप्त कर चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता, वही चकित रह जाता। दुख–दारिद्रय और करुणा जैसे उसमें साकार हो उठे थे। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा

स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस कामयाबी पर गदगद थे – समझ नहीं पा रहे थे कि उसे कहाँ–कहाँ उठाएँ, बिठाएँ। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया था। उस प्रदर्शनी को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी, भूरि–भूरि प्रशंसा हो रही थी और चित्रा को लग रहा था, जैसे उसके सपने साकार हो गए। उस भीड़–भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गई ! 'रूनी' ! कहकर वह भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गई – 'तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया, रूनी!' इसका उत्तर देते हुए उसने कहा, 'चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आई थी। तू तो एकदम भूल ही गई।'

(ख) इस बीच, राष्ट्रपति के आदेश से 1961 में "वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग" की स्थापना हुई। आयोग ने अब तक तैयार की गई समस्त शब्दावली के पुनर्निरीक्षण तथा विविध विषयों में स्नातकोत्तर स्तर की शब्दावली के निर्माण का काम अपने हाथ में ले लिया। आयोग ने सर्वप्रथम शब्दावली–निर्माण के मार्गदर्शक सिद्धांत तय किए और उस समय तक तैयार की गई शब्दावली का पुनरीक्षण करने के लिए विविध विषयों की विशेषज्ञ समितियाँ गठित कीं, जिनमें भारत के सभी भाषायी क्षेत्रों के उपलब्ध प्रतिष्ठित विद्वान तथा भाषाविद सम्मिलित किए गए। देश के प्रबुद्ध वर्ग में शब्दावली–निर्माण के प्रति चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से उक्त विशेषज्ञ सलाहकार–समितियों की बैठकें और संगोष्ठियाँ देश के विभिन्न भागों में आयोजित की गईं। आयोग ने पारिभाषिक शब्दावली के भाषावैज्ञानिक पक्ष पर विचार करने के लिए अलग से एक संगोष्ठी आयोजित की, जिसमें देश के सभी भाषायी क्षेत्रों के प्रमुख भाषाविदों ने भाग लिया। उन्होंने सभी भारतीय भाषाओं के लिए यथासंभव समान शब्दावली का निर्माण करने में उपस्थित होने वाली रूपात्मक, ध्वन्यात्मक और अर्थ संबंधी समस्याओं पर विचार करके अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कीं।

अतः आयोग का प्रमुख कार्य ऐसी वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का विकास करना था, जो थोड़े–बहुत संशोधन के साथ सभी भारतीय भाषाओं द्वारा प्रयोग में लाई जा सके। इसे पूरा करने के लिए आयोग को देश में उपलब्ध शब्दावलियों का संग्रह करने, उनमें समन्वय स्थापित करने, शब्दावली–निर्माण के सिद्धांत निश्चित करने और अनुमोदित शब्द–सूचियाँ प्रकाशित करने का दायित्व सौंपा गया। इसके साथ ही विश्वविद्यालय स्तर की संदर्भ–ग्रंथों और पुस्तकों की रचना एवं प्रकाशन का महत्वपूर्ण काम भी आयोग के कार्यक्षेत्र में रखा गया। इस प्रकार, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के वैचारिक आदान–प्रदान और अध्ययन–अध्यापन को सुगम बनाने के लिए सभी संभव साधन जुटाना आयोग का दायित्व है।

(ग) तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के राम–भक्त कवि हैं। उनका जन्म संवत् 1589 (1532 ई.) में उत्तर प्रदेश के सोरों नामक स्थान में हुआ। कहा जाता है कि उनका प्रारंभिक जीवन बड़ी कठिनाइयों में बीता। वे, बावा नरहरिदास के शिष्य थे और उन्हीं से राम कथा में दीक्षित हुए।

तुलसीदास के लिखे हुए छोटे–बड़े बारह ग्रंथों का उल्लेख आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया है। इनमें प्रमुख हैं – दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस और विनय पत्रिका। सभी रचनाओं में भावों की विविधता तुलसी की सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के आदर्शों को लोगों के सामने रखा। तुलसी की भक्ति भावना, सीधी, सरल और साध्य है। राम उनके आदर्श हैं और मर्यादा पुरुष हैं। रामचरितमानस में तुलसी ने राम और शिव, दोनों को एक–दूसरे का भक्त दिखाकर वैष्णवों और शैवों में समन्वय करने का प्रयास किया। राम

कथा को लेकर संस्कृत और हिंदी में अनेक रचनाएँ हैं, परंतु भरत का जो रूप तुलसी ने दिखाया है, वह रघुवंश या वाल्मीकि रामायण में भी नहीं है।

भावों की विविधता के साथ–साथ तुलसी की शैली में विविधता भी है। सूरदास की पद–शैली, चारणों की छप्पय, कवित्त, सवैया पद्धति, दोहा, नीति–काव्यों की भक्ति पद्धति और प्रेमाख्यानों की दोहा–चौपाई पद्धति आदि का सफल प्रयोग तुलसी ने अपनी रचनाओं में किया है। तुलसी ने अपने समय की दोनों साहित्यिक भाषाओं – अवधी और ब्रज का प्रयोग किया। मानस के अतिरिक्त अधिकांश रचनाओं की भाषा ब्रज है, जिस पर तुलसी का अद्‌भुत अधिकार है।

(घ) हम पहनने–ओढ़ने और सुख–सुविधाओं में कितने भी आधुनिक हो जाएँ पर स्त्रियों के प्रति सोच न जाने कब आधुनिक होगी। आज भी स्त्री भले ही कितनी विदुषी और कुशल हो जाए पर उसका परिचय ऐसा लगता है कि देह के आगे सारी खूबियाँ बौनी हो जाती हैं। शरीर आकर्षक न हो तो अंदर की खूबियों का महत्व न के बराबर होता है। यदि कोई हुनर प्रकाश में आ भी जाता है तो काफी मशक्कत के बाद।

मैं लखनऊ शहर के गांधी भवन में एक पुस्तक के लोकार्पण के सिलसिले में गई हुई थी। वहाँ पर मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, अध्यक्ष और मुख्य वक्ता के रूप में अनेक विद्वान मंच पर आसीन थे तथा दर्शक दीर्घा में अनेक साहित्यकार और साहित्य–प्रेमियों का जमावड़ा था। समय था – मंच पर बैठे हुए लोगों का परिचय करवाने का। एक विद्वान टाइप के शख़्स दर्शक दीर्घा की आरक्षित पंक्ति से उठे और माइक पर सबका परिचय देने लगे। उन्होंने एक शायरी सुनाकर और करतल ध्वनि प्राप्त करके अपना काम (परिचय करवाने का) शुरू कर दिया। 'ये हैं हिंदी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष और अंतरराष्ट्रीय ख्याति–प्राप्त कवि, ये हैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी के विभागाध्यक्ष, ये हैं साहित्य प्रेमी तथा अनेक पुस्तकों के रचयिता जो कि इस समय प्रशासनिक सेवा में....।'

अब बारी थी एक महिला के परिचय करवाने की, जो वर्धा से लखनऊ पधारी थीं। इनके परिचय में माइक सँभाले माननीय ने एक शायरी पढ़ी जोकि मुझे जस की तस याद तो नहीं पर उसका अर्थ कुछ यूँ था, 'पूरे शहर में कई चेहरों को देखा पर आपके गुलाब जैसा चेहरा कहीं नहीं पाया।' मैंने सोचा ये शख़्स आगे भी कुछ परिचय देंगे पर ऐसा कुछ हुआ नहीं। उनकी इस शायरी पर खूब तालियाँ मिलीं। इसके बाद वे आगे बैठे किसी पुरुष विद्वान का विद्वता से भरा परिचय देने में लग गए। मैं यह जानने को उत्सुक थी कि मंच पर आसीन इस महिला का देह की सुंदरता के अलावा भी कुछ परिचय होगा, पर कोई जानकारी नहीं मिल पाई।

(ङ) आज का जीवन बहुत भाग–दौड़ वाला है। लोगों के पास समय की कमी है। ज़माना इतनी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है कि यदि व्यक्ति उसके साथ कदम–से–कदम मिलाकर न चले, तो वह पिछड़ जाएगा। यही कारण है कि व्यक्ति कम–से–कम समय में अधिक–से–अधिक बातें जान लेना चाहता है। कार्यालय में अधिकारियों के पास इतना समय नहीं होता कि वे फाइलों और पत्रों को पूरी तरह से पढ़ें। वे कम–से–कम समय में अधिक–से–अधिक फाइलों और पत्रों को निपटा देना चाहते हैं। विशेष रूप से वह अधिकारी जिसने हाल ही में कार्यभार सँभाला है। उस व्यक्ति के पास इतना समय नहीं होता कि वह सभी फाइलें विस्तार से पढ़े, अतः वह अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी को संबंधित फाइल की सामग्री का सार प्रस्तुत करने का आदेश दे देता है। इस तरह की स्थितियों में सार बहुत मददगार सिद्ध होता है। सार को पढ़कर अधिकारी तुरत–फुरत ढेर सारी फाइलें निपटा देता है। सार को पढ़कर व्यक्ति अपनी रुचि का समाचार, लेख या कहानी चुन लेता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि 'सार' पूरी सामग्री के आधार पर तैयार किया गया वह

मसौदा है, जो संक्षिप्त होते हुए भी सामग्री की सभी मुख्य बातों को अपने में समेटे होता है और जिसके आधार पर पूरी सामग्री को समझा जा सकता है।

यहाँ आपके मन में प्रश्न उठ सकता है कि जब सार–संक्षेपण का इतना महत्व है और सारे काम सार के आधार पर ही चल सकते हैं, तो फिर मूल सामग्री की क्या आवश्यकता और महत्ता रहती है अर्थात फिर मूल विस्तृत सामग्री क्यों पढ़ी जाती है? इससे भी और आगे बढ़कर सब लोग सार ही क्यों नहीं लिखते अपनी बातें विस्तार से क्यों लिखते हैं? आपका ऐसा सोचना सही है, परंतु मूल सामग्री का अपना अलग महत्व होता है, जिसे किसी भी प्रकार से छोड़ा नहीं जा सकता।

(च) हमारी कल्पना पंख पसारती है और हमारे मन में जिन नए–नए भावों का संचार होता है उन्हें हम लिपिबद्ध करना चाहते हैं। अगर हमें शुद्ध लिखना आता ही नहीं तो हम अपने आपको अभिव्यक्त कैसे कर पाएँगे। इसके लिए हमें भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण और उसके बाद शब्द से परिचित होना होगा। अगर हम सही शब्दों का चयन नहीं कर पाते तो लिखते समय वर्तनी के गलत होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे आपने कई लोगों को यह कहते सुना होगा कि 'आपने अस्नान किए कि नहीं'। यही बात वह लेखन में कर जाते हैं जोकि गलत है। कारण, 'अस्नान' की जगह उन्हें 'स्नान' शब्द लिखना चाहिए था। कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ 'स्थायी' को 'अस्थायी' की तरह उच्चारित किया जाता है, जबकि ऐसा लिखते समय अशुद्धि हो जाती है! इसी प्रकार का एक उदाहरण देखें – 'माँ का दूध बच्चे के लिए पूर्ण अहार होता है।' इस वाक्य में 'अहार' के स्थान पर 'आहार' लिखा जाएगा। कुछ लोगों की 'व' और 'ब' संबंधी अशुद्धियाँ भी लेखन में हो जाती हैं। 'वर्षा' को 'बर्षा' और 'वनस्पति' को 'बनस्पति' लिख जाते हैं। इसके अलावा 'श' 'ष', 'स' की अशुद्धि तो अधिकतर लागों से हो ही जाती है। वे 'शासन' को 'सासन', 'नमस्कार' को 'नमश्कार' और 'कष्ट' को 'कस्ट' लिख जाते हैं। 'ट' और 'ठ' के लेखन में भी खूब अशुद्धियाँ होती हैं। विशिष्ट के स्थान पर 'विशिष्ठ' और 'संतुष्ट' की जगह 'संतुष्ठ' लिखते हुए आपने कई लोगों को देखा होगा, जो कि गलत है। इसी तरह हमें 'क्ष' और 'छ' लिखते समय भी अशुद्धियों से बचना होगा। लोग 'क्षमा' के स्थान पर 'छमा' या 'छिमा' लिख देते हैं। और 'कक्षा' की जगह 'कच्छा' जबकि 'कच्छा' भिन्न अर्थ रखता है। इस तरह की अशुद्धियाँ बड़ी अशुद्धियों की श्रेणी में गिनी जाती हैं।

(छ) **विषय** : स्वायत्त संगठनों, सांविधिक नियमों एवं सरकारी उद्यमों के कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था एवं पाठ्य–पुस्तकों की उपलब्धता के बारे में।

मुझे इस विभाग के कार्यालय ज्ञापन सं. ई–12047/49/73–हिंदी दिनांक 17.9.1984 की ओर सभी मंत्रालयों/विभागों का ध्यान आकर्षित करने का निदेश हुआ है। इस कार्यालय ज्ञापन में बताया गया है कि सभी स्वायत्त संगठनों, सांविधिक निकायों एवं सरकारी उद्यमों के हिंदीतर भाषी कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। उनके लिए हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम सरकारी कर्मचारियों की तरह चलाए जाने की अथवा हिंदी शिक्षण योजना के अधीन प्रशिक्षण–केंद्र खोलने की व्यवस्था की गई है। समय–समय पर इस विभाग के ध्यान में यह लाया गया है कि संगठनों के कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए पाठ्य–पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पातीं, जिसके कारण उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इस समस्या पर इस विभाग में विचार किया गया है। यह निर्णय लिया गया है कि प्रयोग के तौर पर सरकारी उद्यमों/स्वायत्त संगठनों तथा सांविधिक निकायों को फिलहाल तीन वर्ष के लिए अपने कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए पाठ्य–पुस्तकें स्वयं मुद्रित कराने की अनुमति दे दी जाए, ताकि उन्हें पुस्तकें प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो। वे कृपया मुद्रण के पश्चात निम्नलिखित जानकारी इस विभाग को उपलब्ध कराएँ :

(क) हर पाठ्यक्रम की कितनी पुस्तकें मुद्रित हुई हैं?

(ख) मुद्रित पुस्तकें कितनी–कितनी और किन–किन कार्यालयों में वितरित की गई हैं?

(ग) पुस्तक के भीतरी पृष्ठ पर 'प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित, तथा नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित' के स्थान पर चेयरमैन/मैनेजिंग डाइरेक्टर (उपक्रम/संस्थान का नाम) द्वारा अपने कर्मचारियों के हिंदी प्रशिक्षण के लिए मुद्रित' लिखा जाए।

क.ख.ग.
संयुक्त सचिव (राजभाषा)
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

5. निम्नलिखित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

दुनियावी वड़ाईअ ऐं तवारीखी भभिके जो सिन्धु जे वादीअ में नाउं बि कोन्हे। सिन्धु जे रवातियुनि ऐं इतिहास में न हुकमिराननि ऐं जंगजून जो ज़िकरु आहे, न अवतारनि ऐं पेग़म्बरनि जो विस्तार ई आहे। सिन्धियुनि जो ज़ोरु रहियो आहे पाण विञाइण ते ऐं न पाण वधाइण ते, तन्हाई या एकान्त ते न गोड़ गम्बोड़ ते, साईंअ सां मिलण ते न जगत में प्रसिद्ध थियण ते। भला जिते आब ऐं मिटी लहिज़े लहिज़े में पिया यादगीरी डियारीन्दा त हीउ संसार बुदबुदो आहे ऐं वारीअ जो कोट आहे, जिते जेड़ांह निहार त पाणीअ जी अछ या सुनसान बरपट–करड़ा डूंगर कह घणा ऐं वाटुनि ते वारी – तिते दुनियवी शान ऐं शौकत दिल खे कीअं डोलाइमान कन्दा? इन्हीअ सबबि सिन्धी तोकली आहिनि, ज़िन्दह दिल आहिनि। जीअं सिन्धु जे जायुनि में काराण कान्हे, अन्दरां हिकु बियो कोन्हे, न मीनार, न तहखाना, न भूलभुलइयां; तीअं सिन्धु जे माण्हुनि में फ़रेबु कोन्हे, रियाउ कोन्हे, बियाई कोन्हे। अहिड़ी आहे सिन्धु जी भूमी।

***